Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

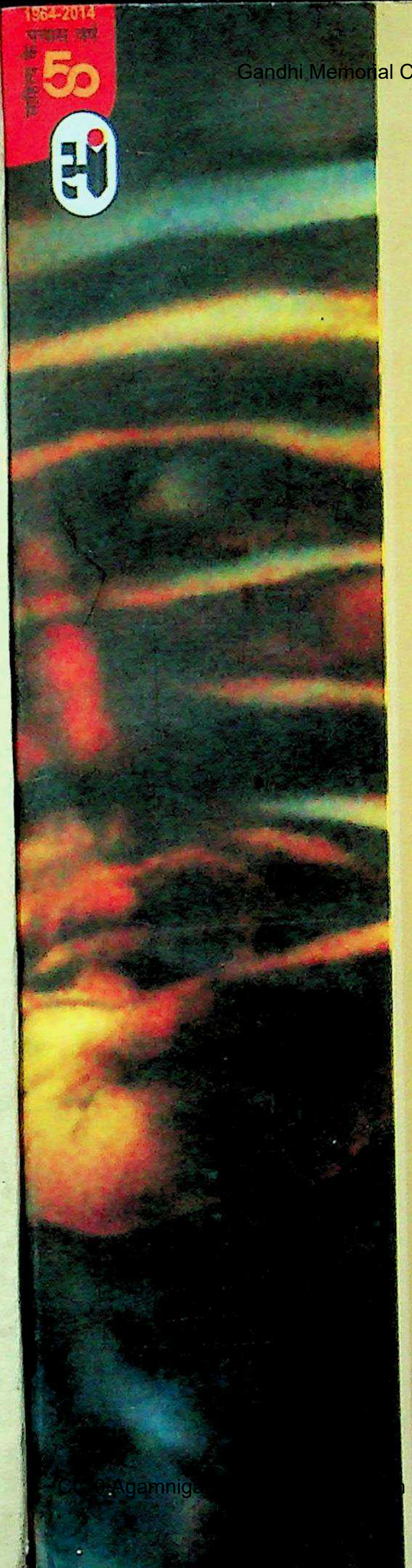

ऋण गुणा ऋण

तथा कुछ अन्य कविताएँ

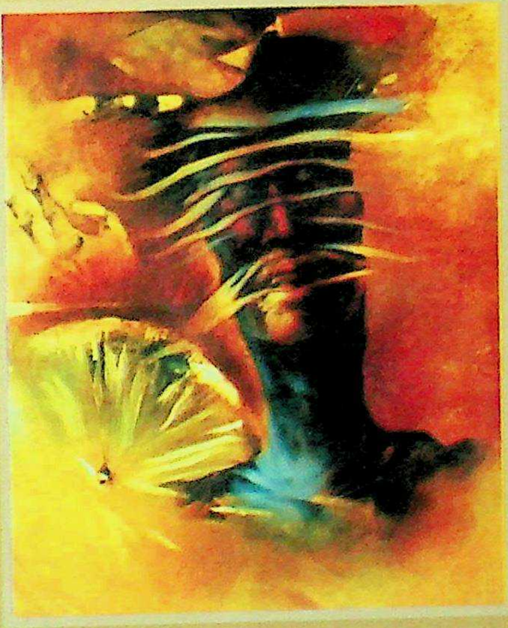

राजेन्द्र कुमार

CC-0. Agamniga... Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब रास्तों के नाम हों लेकिन उनकी दिशाओं के कोई नाम न हों, जब सर्वत्र गतिशीलता ऐसी हो कि जड़ता के मुहाने पर पहुँचते ज़रा भी देर न लगती हो, तब ये कविताएँ एक *'विकल सिरफिरे'* की तरह उपस्थित मिलती हैं- *'सिर फिरा कर देखता है जो किसी पीछे गिरे सहयात्री को/दौड़ में यह कौन औंधे मुँह गिरा है'!*

ये कविताएँ इस भरोसे से बुलाती हैं कि उन्हें अपने पाठकों से कुछ मर्म की बातें करनी हैं। मर्म की बातें ये कि *'सभ्यताक्रांत'* हम इतने हो गए हैं कि अपनी-अपनी शक्लें भी हमें महज़ *'धारने-उतारने'* की चीज़ लगने लगती हैं। *मेले हैं टूटे खिलौनों के, दर्द हैं खोए हुए अर्थों के।* शहर हैं ऐसे *'नक़ाबपोश'* की तरह कि पता चले- *'जो परदा हमने अपनी नंगी खिड़की पर टाँगा था, वह वहाँ नहीं है/वह शहर के चेहरे पर है'।* पता चले यह भी कि *'हमारी आँत में बग़ावत की जो ग्रंथि है/उसका स्राव/गज़ब का पाचक है/सब कुछ पचा देता है/जो हम निगलते हैं/अनुकूल-प्रतिकूल।' 'बाहर-भीतर'* सर्वत्र है वह, जो *'एक स्तर पर मरकर भी/दूसरे पर जी सकता है/पसार कर अपनी खुरदरी रसना/हमारी साँसों का संकल्प-रस/सारा का सारा पी सकता है'।* बारिश से पहले के अँधेरे को लेकर *'अपने-अपने कमरों में कइयों ने/ यह बहस छेड़ दी है कि/अँधेरा डर का पर्याय है या डर का कारण...।'* यह कविता ही है जो पता देती है कि *'पुरवा इस बहस से असहमत है'* और *'भीगी छत पर/भोले बच्चे/मगन पतंग उड़ाने में हैं'।*

आवरण : अजय जेटली

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur. Bantalab
Jammu
Acc No 4894
Dated 22.12.2023

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऋण गुणा ऋण

तथा

कुछ अन्य कविताएँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऋण गुणा ऋण

तथा

कुछ अन्य कविताएँ

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

राजेन्द्र कुमार

साहित्य भंडार
50, चाहचन्द, इलाहाबाद-211 003

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऋण गुणा ऋण

ISBN : 978-81-7779-293-5
प्रकाशक : साहित्य भंडार
50, चाहचन्द, इलाहाबाद-211 003
फोन : 0532-2400787, 2402072
ईमेल : sahityabhandar50@gmail.com
प्रथम संस्करण : 2014
पुनर्मुद्रण : 2014
© : राजेन्द्र कुमार
मूल्य : ₹ 50.00
लेजर टाइपसेटिंग : अमन कम्प्यूटर, बेनीगंज, इलाहाबाद
मुद्रक : सुलेख मुद्रणालय
148, हीवेट रोड, इलाहाबाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऋण गुणा ऋण
बराबर धन,
गणित के गुरु ने सिखाया था
बहुत पहले....
बहुत दिन बाद...आया याद।
आया याद तो मूल्याग्रही सन्दर्श
धुँधलाते हुए धन-चिह्न की परवाह से
आहत न दीखा
अर्थ सीखा
नया,
ऋण को कर गुणित ऋण से
लिया पा–
स्वयं के पुनर्परिभाषित होने का
तरीक़ा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

❑ **यह संस्करण** 9

❑ **ऋण गुणा ऋण**

मिट्टी के ढेले 11
पावस की शाम 12
गुलाब 14
प्रश्न-चिह्न 18
नया बरस 20
आदान-प्रदान 22
दीवार 24
(अति-) रिक्त चेहरे 26
शीशा 28
सभ्यताक्रान्त 30
टूटे खिलौनों के मेले में 32
खोये हुए अर्थ का दर्द 34
हवाएँ और अख़बार 36
ऊँचा कहलाये जाने का मोह 37
सनक 39
इतिहास और नदी 40
शाप-मुक्त होने तक 42
खबर के पहले 44
आतंक 46
अपने-अपने धृतराष्ट्र के लिए 48
स्वीकारोक्ति 50
स्पष्टीकरण 51
अपने से परे 52
नक़ाबपोश 55
आहतनाद 57

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीमाएँ	60
पता नहीं	61
विपर्यय	62
मोह न नारि नारि कै रूपा	64
सत्योन्मुख भ्रम	66
आदमी और कपड़ा	68
चन्द्रग्रहण को देखकर	70
ग़लतफ़हमी	71
जहाँ	72
शर-शैय्या पर	75
वे 'तीन' और 'चौथा' मैं	76
बीवी से ग़रीबी तक	81
यूरेका-यूरेका	85
बाहर-भीतर	91
बारिश से पहले का अँधेरा	93
पतंग	96
पुतली घर का भोंपू	99
इतवार का दिन	102
मुक्ति-काम गाँधी	104
एक गिरे हुए मकान को देखकर	108
नामी आदमी	112
आत्मघाती भाई से	114
यादों के सींखचे	118
ऋण गुणा ऋणः	120
❑ कुछ अन्य कविताएँ	
सोता हुआ बच्चा	127
संजय उवाच	129
सूर्यास्त	131
वह—एक कोई और	132
प्रार्थना का मौन	133
चिड़ियाँ	134
आशीष मुद्रा	135
रास्ता	136
हुआ यह क्या	139
कब कोई क्षण	140
कुछ अशआर कुछ मिसरे	141

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह संस्करण

'ऋण गुणा ऋण' नाम से मेरे पहले कविता-संग्रह का प्रथम संस्करण सन् 1978 में आया था। बरसों बाद यह नया संस्करण प्रकाशित हो रहा है तो मैं अपने को, प्रथम संस्करण के साथ जुड़ी एक मधुर स्मृति में खोता हुआ पा रहा हूँ। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 1979 में 'ऋण गुणा ऋण' के पुरस्कृत होने पर, वह पुरस्कार जिन हाथों से मैंने ग्रहण किया था वे हाथ आचार्यप्रवर हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के थे। उन हाथों का स्नेहिल और आत्मीयतापूर्ण स्पर्श आज भी अपनी पीठ पर अनुभव कर रहा हूँ।

उन्हीं आचार्य द्विवेदी जी की स्मृति में यह
नया संस्करण मेरी एक विनम्र प्रणति है।

प्रथम संस्करण एक वरिष्ठ कथाकार मित्र श्री सतीश जमाली ने अपने 'चित्रलेखा प्रकाशन' से छापा था। अब यह अपने नये रूप में 'साहित्य भण्डार' के श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल द्वारा छापा जा रहा है। इस नये संस्करण में कुछ अन्य कविताएँ भी शामिल कर ली जा रही हैं। लिखी ये भी उसी दौर में गयी थीं, लेकिन प्रथम संस्करण में शामिल न की जा सकी थीं।

प्रथम संस्करण में कुछ कविताएँ आपात्काल के दौर की भी थीं—विशेष रूप से 'पावस की शाम' और 'बारिश से पहले का अँधेरा'। 'बारिश से पहले का अँधेरा' यथावत् अपने मूल रूप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में प्रकाशित न हो सकी थी। आपात्काल के वे काले दिन थे। पत्र-पत्रिकाएँ सेंसर होकर पाठकों तक पहुँचती थीं। कई बार तो लगभग पूरे-पूरे पन्ने स्याही से पुते होते थे। 'बारिश से पहले का अँधेरा' का भी यही हश्र हुआ था। 'धर्मयुग' में वह छपी तो बीच के तीन स्थलों पर स्याही पुती थी। इस संस्करण में वह अपने मूल रूप में प्रकाशित हो रही है।

—राजेन्द्र कुमार

इलाहाबाद
जुलाई 24, 2013

पुनश्च

'साहित्य भंडार', इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित संस्करण का एक ही वर्ष में पुनर्मुद्रण हो रहा है। यह एक उत्साहवर्द्धक प्रमाण है कि कविता-पुस्तक खरीदकर पढ़ने वाले सहृदय पाठक हिंदी-समाज में अभी भी इतने कम नहीं हैं।
कविता के प्रति भरोसा बढ़ाने वाले अपने पाठकों का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

—राजेन्द्र कुमार

इलाहाबाद
अक्तूबर 2, 2014

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिट्टी के ढेले

सहकर सूरज का प्रखर ताप
मिट्टी के छोटे–छोटे
कुछ ढेले–
पत्थर बन निस्पन्द पड़े थे,
सहसा सुनाई दी
किसी की पद चाप...
बड़ी–बड़ी बूँदें आईं
घुल गये पिघल गये–
मिट्टी के ढेले–
आप ही आप!
और फिर, तरल बन
बह गये
चुपचाप!

पता नहीं क्यों
मन और उदास हो गया है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पावस की शाम

वर्षा के झरने से
ये शाम
अभी अभी धुल के निकली है।
कुछ उजली हो गयी है,
लेकिन कैसी है यह उदासी
जो फिर भी नहीं धुली
नहीं मिटी, नहीं घुली!
सफ़ेदी की आड़ ले
पीलापन–
कुछ और उभर आया है।
बरसे–अनबरसे मेंह
क्षितिज की ओर
बेतहाशा भाग रहे हैं!
ये भीगी दीवारें
यह धुली हुई छत,
ये बलखाती बेलें
और चमकीली बूँदें हाथों में थामे।
उसके पत्ते....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सब कुछ–
जैसे डूब गया है
किसी गहरे विषाद में!

अलगनी पर लटकी
मोती–सी बूँदें
काँप–काँप उठती हैं....
उनमें से कब कौन
    पवन के झोंकों से
    नीचे आ गिर पड़े–
        कुछ ठीक नहीं!

कुछ ठीक नहीं
कब
अँधेरे के सामने
    आत्म–समर्पण कर दे–
वर्षा के झरने से
अभी–अभी धुल के निकली है
जो शाम!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुलाब

कुछ ही दिनों पहले
लगाया था मैंने
एक छोटे–
        सूने–
        गमले में गुलाब...।
फिर ऐसा लगा
जैसे वह सूख गया
अपने ही भाग्य की
कलियों से रूठ गया
ऐसा लगा–
भाग्य जैसे गमले का फूट गया
छूट गयी आशा
        कि गमले की भूरी–भूरी
        मिट्टी पर गोरा–गोरा
        महकेगा खिलकर गुलाब !
        ...   .

        लेकिन कल शाम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहसा ही दृष्टि
जाकर उलझ गयी–
कँटीली एक टहनी से,
टहनी कुछ सिहरी
साँसें लीं गहरी....
हाँ–हाँ–
इस टहनी के सर पर ही फूला था–
पुलकित गर्वोन्नत गुलाब!

मैं चुप था,
पंखुरियाँ भोली
शरारत से बोलीं–
'अरे, तुम तो कवि हो न?–
देख क्या रहे हो?–मेरे
सौन्दर्य को वाणी दो;
भावों के
तुम तो
बड़े मुखर दानी हो!'

बहुत सोचा–
लिखूँ कुछ...
सादे–श्वेत काग़ज़ पर गुलाबी पंखुरियों का
रंग, शब्द–कौशल से–
और कुछ निखार दूँ!

लाख मनाया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न मानी मगर लेखनी,
काग़ज़ की सितता पर
    स्याही के छींटे
    न उतार पाये गुलाबी छवि–छाया को!

मचलीं तितलियाँ
इठलाती पँखुड़ियों पर,
सिहरा समीरण
अलसती अँखुड़ियों पर,
लेकिन–मैं चुप रहा–!
(फड़फड़ाया बहुत कुछ)
पर न कुछ कह सका
औ' न कुछ लिख सका
निर्निमेष देखता रहा....

...   .

और आज शाम,
देखा जब क्षितिज पर
सूरत फिर डूबा–सा
–पश्चिम की माँग का
सेन्दुर कुछ बिखरा–सा,
    याद आ गया वह...
पहुँचा ललककर फिर

....

टहनी वह सूनी थी.....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मृदु मृदु पंखुरियाँ सब
(–जाने किस प्रेरणा से–)
माटी की गोद में
रमा चुकी धूनी थीं!
अभी कल कहती थीं–
'देख क्या रहे हो?–मेरे
सौन्दर्य को वाणी दो'
और
आज कहती हैं–
हो सके तो, आँखों की
  गंगा का–
  अधिक नहीं–दो बूँद पानी दो!
  तुम तो कवि हो न?–
  अपने कवि की निशानी दो!!'

और–
अब–उनका सौन्दर्य
बहुत–बहुत निखर आया है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न–चिह्न

यह
मेरा बहुत पुरा परिचित है, माना,
लेकिन फिर भी है
अब तक कितना अनजाना!
यों जब से 'क ख ग घ' पढ़ना शुरू किया
तब से इसको कितने ही वाक्यों के आगे
यों ही लहराता देख रहा......
यह कौन त्रिभंगी बना खड़ा–?
जब तब सुलेख की कापी में
कुछ लिखा,
इसे शत बार लिखा
पर यह केवल काग़ज़ पर चिपकी रहने वाली
चीज़ नहीं

जीवन–पथ–
जाने–अनजाने, जिस ओर मुड़ा,
कभी कुछ पास
कभी कुछ दूर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरे,
यह नागपाश हर बार दिखा!

लगता जैसे
जीवन का यह हर क्षेत्र जकड़ कर बाँधे है
यह छोटा-सा चिह्न
न जाने शक्ति कौन-सी साधे है!

यह प्रश्न-चिह्न-?-
लघुकाय-
समय-असमय प्रायः
हो पवन-पुत्र-सा महाकाय
जीवन-भूकम्प मचा देता....

यह-
मेरा बहुत पुराना परिचित है माना
लेकिन फिर भी है अब तक कितना अनजाना!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नया बरस

रात्रि का अंतिम प्रहर है
अंधकार है अभी तक,
स्तब्ध–
हर दिशा–द्वार है अभी तक,
सुदूर किसी गाँव में
कुछ किसान जागे हैं
गुदगुदे पलंगों पर
कुछ अलसाई पलकें
धनी–मानी सपनों को
मीठी–मीठी नींद में
अभी तक पागे हैं....

अभी–अभी–
पास के किसी घर से
कुछ चोर निकल भागे हैं....
रात्रि का अंतिम प्रहर है
अन्धकार है अभी तक!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकाश में
कुछ सितारे
कुछ दूर तेजी से लपककर
बुझ जाते हैं
जैसे
मनुष्य के कुछ मनोरथ
प्रयास की तेजी में ही
खो जाते हैं!....

नया कुछ भी तो नहीं!–

टूटते तारों को
इधर–उधर फूटते
तम के फव्वारों को
सिकुड़े उजाले के
सहमे इशारों को
नये बरस की
कैसे बधाई दूँ!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदान–प्रदान

होते ही भोर, गगन–
सूरज की तकली से
इन्द्रधनुषी किरणों का सूत कात
बुनता है धवल वसन
और
डाल देता है
कन्धे पर दिन के!

धरती भी मन ही मन
पुलक पुलक उठती है
और
घूम–घूम मगन.......
दुनियावी हलचल से
रव से–कोलाहल से
'मौन' के तार खींच
पिरो–पिरो लेती है
मनके
अपने मन के!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और–हम–
    जो धरती पर
    गगन–तले रहते हैं–
'मानव' हैं–
देते हैं क्या भला
स्वागत में दिन के?–

सिर्फ़ कुछ कुण्ठाएँ
सिर्फ़ कुछ अनास्थाएँ
और बीन रखते हैं
अपने लिए
सिर्फ़
    कुछ
      सूखे हुए
        तिनके!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दीवार

दर्प की दीवार
जिसे मैंने खुद ही खड़ा किया था
अपने को
औरों से अलग करने के लिए
आज, जाने क्यों
मुझे ही–
बेहद कुरूप लगने लगी है!
इस पर
जगह–ब–जगह
पपड़िया उचटने से
भद्दापन उभर आया है।

महत्त्वाकांक्षा के
आवारा लड़कों के हाथों में
कुण्ठा के छोटे–छोटे चाकू
जाने कहाँ से आ गये
कि उन्होंने इनकी नोक से
इस दीवार पर
तमाम टेढ़ी–मेढ़ी रेखाएँ खींच डाली हैं
जिनका अर्थ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं बिलकुल नहीं समझता
औ' शायद
इनका अर्थ कुछ है भी नहीं
लेकिन
इनकी तरफ़
लगातार देखते रहने से
जब–तब
कई आकृतियाँ बन जाती हैं
जो–मुझ पर हँसती हैं
रोती भी हैं
व्यंग्य भी क़रती हैं

लेकिन कभी–कभी–
ये रेखाएँ
सबकी सब
एक–दूसरें को काटती हुई
एक–दूसरे से इस तरह उलझ जाती हैं
कि उनमें–
मुझे लगता है–मेरे प्रति–
तटस्थता का भाव आ गया है...

और तब मैं बेचैन हो उठता हूँ
सोचता हूँ–
क्या पाऊँ
कि ऊपर से नीचे तक
इस दीवार को छील डालूँ
नंगा कर दूँ
या
ढहा दूँ!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(अति-) रिक्त चेहरे

और भी हो सकते हैं
लेकिन, जहाँ तक मैं जानता हूँ
मेरे दो चेहरे हैं।

और, वे दो भी
नहीं हैं
मेरे—
एक से मैं हँसता हूँ
एक से रोता हूँ।

धारण नहीं करता हूँ
उन्हें,
सिर्फ ढोता हूँ।

फिर भी उन्हें कहता हूँ अपना ही,
संख्या भी–दो नहीं–एक ही
बताता हूँ, क्योंकि
डरता हूँ–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं कोई
इनमें से एक भी
चेहरा
उधार न माँग बैठे
अतिरिक्त समझकर
अति रिक्त समझकर

आज–हर एक को ज़रूरत है
कई कई चेहरों की!
कई कई चेहरों की!!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शीशा

मुझे मिला है
जीवन का जो चौड़ा शीशा
उसमें होकर
मुझे देखने दो वे सारे अक्स
कि जिनमें ढल आयी हैं
मेरी अनुभूतियाँ!

कृपाकर इसे
किसी
छोटे-सँकरे चौखट में
जड़ने का प्रयास
मत करो!

भले ही अपनी
पथरीली धरती का कोई कंकड़
ऐसा फेंको,
टूट जाय यह शीशा
चूर-चूर होकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिखरें
इसकी किरचें
दूर-दूर होकर

जीवन का जो चौड़ा शीशा
मुझे मिला है
इसे कृपाकर
छोटे-सँकरे चौखट में
जड़ने का
कसने का
    मत करो
    कोई भी प्रयास मत करो!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सभ्यताक्रान्त

हम बहुत सभ्य हैं
बहुत आगे आकर
रुक गये हैं।

रुक गये हैं
हाँ,
मशीन चलती है
    हर चीज़ जिसमें ढलकर
    अपनी शक्ल को
    बदलती है

क्या
हमारे सभ्य होने का यह प्रमाण
अपर्याप्त है?

हम रुक गये हैं
पर खुद को चलता कहने का
हक़ छिनने नहीं दिया है
    हमने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शक जिनने किया है
हमारी गति पर
उनका हर स्वीकार
हम नकारते हैं।

हम धारते हैं शक्ल
और शक्लें उतारते हैं।
इनमें से किसी एक को भी
सही कहने का साहस
(सभ्य-सा हँस कर) खो देने वाला
चरित्र
    आत्म-मुग्धता में
    आप्त है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टूटे खिलौनों के मेले में

आज की रात
नींद
आँखों से दूर कहीं
जाने किस वन में
भटका की!

जागरण की थापों से
कुण्डी दरवाजे की
चुपचाप
खटका की!

और
आँखों के पास
पलकों के साये में
यादों के मृगछौने
खेला किये....

टूटे खिलौनों का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेला लिये
मन की चंचल नदी के किनारे
मैं जगता रहा।

जगता रहा।
टूटे खिलौनों के मेले में
ठगता रहा
खुद को।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खोये हुए अर्थ का दर्द

मन के मन में
रहने वाली अनुभूतियाँ
याचना करती हैं अधरों से
शब्दों की।

शब्द कभी मिलते
कभी, नहीं मिलते हैं।

नहीं मिलते हैं
तो भाव भटक जाते हैं
अन्धी गलियों में।

थककर
सो जाते हैं
किसी–स्वैरिणी–
अभिव्यक्ति की जंघा पर
सर रखकर....

और
मिलते हैं, तो भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कैसी विडम्बना है
कि मिले शब्दों के कोहरे में
अर्थ सारे के सारे
धुँधला जाते हैं
खो जाते हैं

और—तब
दर्द की घाटी में
सूरज के उगने तक
चुप रहना होता है....
चुप....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हवाएँ और अख़बार

दिन भर
मुर्दा शहर के नथुनों में पैठकर
हवाएँ–रोज़–
साँस लेते रहने का
वहम उगलती हैं

रात
देर देर तक
खबरें बटोरती है

सुबह के हाथों में अखबार
लाखों निगाहों के जाल में जकड़ा–
इससे पहले कि अपनी छोटी–सी
उम्र के लिए
हवाओं को शुक्रिया कह सके,
दम तोड़ देता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊँचा कहलाये जाने का मोह

मेरे गिर्द
एक बहुत बड़ी भीड़ थी
सर ही सर दिखते थे
भीड़ का सैलाब–बेहिसाब

'हाथों को हाथ नहीं सूझता'–
ऐसा वे कहते थे
रेले में बहते थे
कुहनियों के धक्कों को झेलते
खुद भी ढकेलते
सब मेरे गिर्द
रह गये थे
भीड़ की भँवर में फँसकर

मैंने देखा, अवसर अच्छा है–तुरन्त
एलान कर दिया
–'आप सब
    जो एक दूसरे को देख नहीं सकते,
मुझे तो देख रहे हैं न?–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसलिए मान लें
कि मैं
आप सबसे–ऊँचा हूँ!'
भीड़
कोलाहलपूर्ण ढंग से चुप थी
मौन स्वीकृति का लक्षण हो न हो
मैंने मान लिया कि सबने
मुझे
सबसे ऊँचा
मान लिया है....

तभी
मेरे तलवों के नीचे कुछ सुरसुराहट
हुई
कुछ लिजलिजा–सा...
भीड़ में कुचली हुई लाश! जिस पर
मैं खड़ा था–शायद अभी भी
साँस ले रही थी
शायद उसमें अभी और जीने की इच्छा–
उत्कट इच्छा
कसमसा उठी थी.....
लेकिन, यह जानकर भी मैं
अपने पाँव
नीचे उतार न सका

कितना निर्मम होता है
ऊँचा दिखने/ऊँचा कहलाये जाने का
मोह!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सनक

किसी बहके हुए क्षण की सनक थी–
कि मैं अपनी ग़लतियों को सुधार लूँ।
लेकिन ज़िन्दगी कोई कापी नहीं है कि उस पर
ग़लतियों के नीचे नैतिकता से
–नैतिकता भी कोई स्याही नहीं है–
निशान लगाऊँ
और फिर अभ्यास करूँ ग़लतियाँ सुधारने का
अभ्यास और अभ्यास....

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतिहास और नदी

हम नदियों के बहाव में
मोड़ आते हैं
लेकिन हमें
तोड़ नहीं पाते हैं
अपने उत्स से–
यही हमारी महानता है!
हमारा नाम गंगा हो या पद्मा
कुछ फ़र्क नहीं पड़ता
फ़र्क पड़ता है
छिछले तालाब को नदी कहने से
या
नदी को
वहशियाना सैलाब कहने से

ग़लत नाम देने का
कोई भी प्रयास
ज़्यादा से ज़्यादा यही हो सकता है न–
कि इतिहास के किसी पन्ने पर
भद्दी स्याही ढरक जाये;

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेकिन
इससे हमारी पहचान नहीं ढकेगी
न ग़लत साबित होगी,
हमें विश्वास है।

क्योंकि भूगोल को हमने कभी
भ्रम में नहीं रक्खा
क्योंकि इतिहास को हमने
जिया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शाप–मुक्त होने तक

ऐसी हर खिड़की पर
जो बाहर की ओर खुलती है
लटके हैं कई कई चेहरे।
अंकित है हर एक पर
अभिशापित होने का भाव।
बहुतों ने
आँख के गुलेल से
दृष्टि के पत्थर फेंक
इन पर अपना निशाना
आज़माना चाहा;
कुछ सफल भी हुए
लेकिन, इन चेहरों पर अंकित
भाव नहीं बदले हैं
हाँ, मुद्राएँ जरूर बदली हैं।

शायद
इन्हें तलाश है किसी ऐसे–
दृष्टि के स्पर्श की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो शीशे–सा चटका दे इन्हें
और फिर हर चटके चेहरे को
शाप–मुक्त होने तक
यों ही लटका रहने को
उनके हाल पर छोड़ दे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खबर के पहले

और हुआ यह–
कि आग पर तैरते हुए कुछ शहर आये
वे शहर थे, मगर
एक–दूसरे को बन्दरगाह
समझ बैठे
और, एक दूसरे पर ही लंगर डालने
लग गये।

उनमें से एक के अस्पतालों में
दिल–बदल आपरेशन चल रहा था
आपरेशन बड़ा सफल था
लेकिन दिल थे कि लगातार
असफल होते जा रहे थे।

एक के बाज़ारों में
बड़ी चर्चा थी इस्पाती फेफड़ों की,
बिक्री के लिए जिनको
बड़े करीने से
लटकाया गया था रेशमी धागों से।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और, एक के
स्कूलों कालेजों विश्वविद्यालयों में
डेस्कों पर बैठी हुई पीढ़ियाँ
कुर्सियाँ और सीटों से
मेज़ का काम लेने की संभावनाओं पर
ताबड़तोड़ विचार कर रही थीं

अध्यापक
ब्लैक बोर्डों की ओर मुख किये
बार–बार उन पर कालिख पुतवा रहे थे
क्योंकि उन्हें
अपना चेहरा बचाना भी था
नचाते हुए हाथों में चाक
सफ़ेद।

हाँ, तो मैं कह रहा था–
आग पर तैरते हुए शहर आये
वे शहर थे, मगर
एक दूसरे को बन्दरगाह समझ बैठे
एक दूसरे पर लंगर डालने लग गये

नतीजा क्या हुआ–
शायद कल के किसी अख़बार में
कुछ निकले!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आतंक

जागतिक अनुभवों ने
मेरी संवेदनाओं को भोगा
खण्डित हो गया उनका कौमार्य

समूची
पीड़ा को झेलकर
उन्होंने जन्म दिया
धारणाओं को–
कुछ अकाल काल–कवलित हो गईं
कुछ–अनचाहे ही–
मेरे भीतर पलने लगीं
पर, मुझे एहसास हुआ तब
जब वे
    अपने नन्हें पाँवों
    मेरे भीतर चलने लगीं....

मेरा मन हुआ–
इन्हें कोई नाम दे दूँ....

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

–'विश्वास' कहू तो कैसा?
–न...न...न...
विश्वास तो दुकूल है
शोभा की चीज़ है
इसे बाहर से अपने कन्धे पर डाल लो!

ठहर गया मैं
अपने युग की आवाज़ पर

मेरे युग का चहेता है संशय!

अब अपनी धारणाओं को
'विश्वास' कहने में
मुझे लगता है भय!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने–अपने धृतराष्ट्र के लिए

एक
बड़ी–ख़ाली–सपाट
दीवार से
चिपका है एक पोस्टर,
अपने परिवेश में
यह
मैं
हूँ!
कुछ निगाहें
इस पोस्टर पर फिसलती हैं
तो मैं
लगता हूँ अपनी आकर्षण–क्षमता को
तोलने

और,
बराबर महसूसता हूँ
एक बहुत भारी
भारी–भारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हलकापन!

देखता है जब भी
देर तक कोई मुझे
तो लगता है
उसका यह देखना भी
मुझे अनदेखा कर जाने का
एक ढंग है!

भंग कर दूँ क्यों न यह मोह
कि–
कोई
मुझे
देखता है!

अपनी ही आँखों का दृश्य नहीं हूँ मैं,
निस्संग–
अपने–आप से
एकदम
अस्पृश्य हूँ मैं....
हूँ–महज़ हूँ?–शायद....

अपने–अपने धृतराष्ट्र के लिए
आँखों पर
पट्टी बाँधे है
आज भी हर गान्धारी!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वीकारोक्ति

शायद मैंने एक दिन कहा था–
    जीवन एक समुद्र है
    जिसमें तुम बहते हो
    वह बहता है
    मैं बहता हूँ....

पर सच्चाई तो यह है
जो मैं अब कहता हूँ
कि मैं बहता नहीं हूँ,
    डूब गया हूँ
मैं झूठा हूँ
यदि मैं कहूँ कि मैं जीवन से ऊब गया हूँ!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्पष्टीकरण

यह बात नहीं कि मैं जीवन से ऊब गया हूँ
बात यह है कि मैं जीवन में इतना डूब गया हूँ
कि मौत मुझे सतह पर नहीं पा सकती।

हाँ, उसे मिल सकते हैं
मेरी उखड़ी हुई साँसों के बुलबुले
जो हैं इतने ज़्यादा चुलबुले
कि इन गहराइयों में भी
मुझसे लड़कर
भँवरों में पड़कर
जा ही धमकते हैं सीने पर सतह के

निःसन्देह मौत उन्हें पा सकती है
पर मुझे वह सतह पर नहीं पा सकती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने से परे

चौंकता नहीं हूँ मैं
चौंकने की आदत / अब नहीं रही
    शहर में
    बेवक़्त/चीखता है सायरन
    बेवजह–शायद कोई वजह हो!

और
    मैं–
    चुप–हूँ...
मेरे विरुद्ध अफ़वाह है
कि मैंने / अपनी इंद्रियों से काम लेना
छोड़ दिया है!
झूठ–सरासर झूठ है यह
अफ़वाह है, क्योंकि कहने का ढंग ग़लत है।

इस तरह कहो
कि अपनी/ कुछ इंद्रियों की ज़िम्मेदारियाँ मैंने
बदल ली हैं / मसलन्

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आँखों से सुनता हूँ
कान से देखता हूँ
ज़बान से होठों को तर करता हूँ
इसीलिए
ज़बान से / बोलता नहीं हूँ।
लोग
अकसर मुझे देखकर / अपने होंठ
दूसरों के कानों से सटा देते हैं
मैं
आँखों से महसूस करता हूँ
खुसफुसाहट...
और, हँस देता हूँ।

हँसता भी होंठो से नहीं/ सिर्फ़–
दाँत ज़रा–सा भींच लेता हूँ/ साँस–
थोड़ी–सी खींच लेता हूँ....
और चल देता हूँ कहीं न पहुँचाने वाली किसी
सड़क पर।

किनारे हो जाता हूँ
जब कोई बारात आ रही होती है
या–कोई अर्थी गुजर रही होती है
या–इलेक्शन में
जीते हुए किसी नेता का जुलूस
आ रहा होता है
या–दौरे पर निकला साहेब जा रहा होता है...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कानों से देखता हूँ–
इन सबके आगे चलने वाले
बैण्ड का प्रायः हर ढोल फटा है
पर उफ़!–इनकी आवाज़ से
शहर का शहर अटा है!
चौंकता नहीं हूँ मैं,
चौंकने की आदत अब नहीं रही
चल देता हूँ फिर...

और जब
थक जाता हूँ
तो शरीर
किसी फुटपाथ पर रख / आता हूँ
और खुद को–
बीचोबीच चौराहे पर
खड़ाकर
प्रतीक्षा करता हूँ–
कब कोई ट्रक/ मुझ पर से गुज़र जाये।
और मुझे चौंकाने का
असफल प्रयास करने...फिर कोई
सनसनीख़ेज़
खबर आये!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नक़ाबपोश

यह शहर जो किसी का नहीं है
न मेरा, न तुम्हारा
जाने किस अधिकार से
समय-असमय हमारे घर के
दरवाज़ों की दरारों से ताँक-झाँक करता है
और हम देखते हैं कि अभी-अभी
जो परदा हमने अपने अपनी नंगी खिड़की पर टाँगा था
वह वहाँ नहीं है।
वह शहर के चेहरे पर है।

शहर शायद खुश है
कि हम उसे पहचान नहीं सकते।
यों, पहचाना उसे पहले भी कहाँ था हमने?
लेकिन इधर शहर ने शायद भाँप लिया था
कि हम उसे पहचानने की कोशिश में हैं।

वातावरण में अजब-सी दहशत है
कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कौन है यह, जो
हमारी रगों में खून नहीं, त्रास दौड़ा जाता है
हमारे मस्तिष्क में विचार नहीं,
वायवी आक्रोश ठूँस जाता है
और हम खाली रह जाते हैं।
कचहरियों में जाते-जाते
हमारी आवाज़ क़ैद कर ली जाती है
और हम—प्रमाणित होते-होते
जाली रह जाते हैं
मोहर ठुक जाती है उनके फ़ैसलों पर
जो हर फ़ैसले को कुतरने के लिए
तिलिस्मी दाँत रखते हैं।

हमारी आँत में बग़ावत की जो ग्रन्थि है
उसका स्राव ग़जब का पाचक है
वह सब कुछ पचा देता है जो हम निगलते हैं
अनुकूल-प्रतिकूल!
और हमारी तेज़ आँखों के सामने
हमारे अँधेरे को अपने टॉर्च की रोशनी से चीरता
गुज़र जाता है शहर
हमारे साथ रह जाते हैं सिर्फ़ कुछ अन्दाज़
शहर की शख़्सियत के बारे में
और हम देखते हैं कि जो परदा
हमने अपनी नंगी खिड़की पर टाँगा था
वह वहाँ नहीं है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आहतनाद

इस माहौल में होना
बहुत बड़ी दुर्घटना है
घायल हैं सब, पर दीखते नहीं हैं
घाव अन्दरूनी हैं।

बाहर अस्पताल हैं, दवाख़ाने हैं, दुकाने हैं
शहर का शहर है लुकमान-धन्वन्तरि
पर सब गये हैं देखने मरीज़
जो कहीं नहीं है।
यहीं है जो, सामने—एकदम नज़दीक
दम दोड़ता हुआ,
किसी को नहीं दीखता वह;

दवाएँ हैं मग़र इस क़दर हैं
कि हवाएँ
उनकी गन्ध लिये सर्वत्र घूमती हैं
ज़बर्दस्ती घुस जाती हैं हर नथुने में
असर करती हैं मगर फ़ायदा नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क़ायदा है नये ज़माने का कि फ़ायदा
दवा में नहीं,
वाद में ढूँढ़ों
प्रवाह में नहीं, प्रतिवाह में बूड़ो
सीधे को उलटा करो
राहत पाना है तो उलथा करो–
माथे की हर शिकन में खुशामद का
आँखों की हर चमक में चापलूसी का
माथे की हर लकीर में बनावट का
उलथा करो।

राहत पाना है तो नारों में सोचो
नारों में जागो, नारों में सोओ
हँसो नारों में, नारों में रोओ
मारो मातृभाषा को,
भाषा–विवाद की जड़ है यह–
रोग की सबसे गहरी पकड़ है यह

भावात्मक एकता की सिर्फ़ एक भाषा है–
नारों की भाषा
इसमें व्यंजना की अदभुत क्षमता है
विरोधों के बीच भी इसमें समता है
कि इसमें वीभत्स और कुरूप 'आज' के नहीं,
स्वर्गिक औ सुदूर–'कल' के सपने हैं
हमारे नारों पर विश्व मुग्ध है
इनकी चर्चा को दूर–दराज़ पहुँचाने में माहिर
आज भी फ़ाहियान और अल्बरूनी हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस माहौल में होना बहुत बड़ी दुर्घटना है
घायल हैं सब, पर दीखते नहीं हैं
घाव अन्दरूनी हैं
बाहर अस्पताल हैं, दवाखाने, दुकाने हैं....

ओफ़ !–
कितना बाहर आ गये हम
कितनी दूर....
कितने निर्वासित !
सब कुछ बेतुका ही जब समय की तुक हो
तो तुक छोड़ना भी लगता है कितना बेतुका !
बस हो चुका,
ले चुका मैं बाहर का लेप,
घाव अन्दरूनी हैं, और–
बाहर अब कुछ नहीं सूझता !

शहर के घावों पर बँधी हुई पट्टियों-सी सड़कें...
पट्टियों पर उड़ती हुई मक्खियाँ
सड़कों पर उमड़ती हुई भीड़ें....

शहर के हाथों में इतनी भी ताब नहीं
कि मक्खियाँ उड़ा सकें
भनभनाहट का शोर कितना तीखा,
अनुभूति कितनी सूनी है !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीमाएँ

आस्था बेतार के तार की तरह
मुझे सम्प्रेषित करे
इससे पूर्व ही, बन्द दरवाज़ों और
घिसे काँच की खिड़कियों वाले
कमरे में रखे टेलीविज़न सेट पर
खुद को दिखा मैं / एकदम नंगा!
याद नहीं पड़ता
चेतना के किन क्षणों का व्यापार था यह
कि किसी स्टूडियो में मेरी ही मुद्राएँ
मुझे धोखा दे गईं।
आमने-सामने मुँह किये खड़ी
कमरे की दीवारों के बीच
टहलता हुआ
मैं एक-विस्तारीय गति से आकाश नापता रहा
जबकि
कानों में मेरे लगातार टकरा रही थीं
चतुर्विस्तारात्मक आकाशीय अखण्डता की ध्वनियाँ।

ग़नीमत है, उस कोने में मेरा पाँव नहीं पड़ा जहाँ
एकाकीपन की केंचुल से आवृत
सभ्यता का सर्प
कुण्डली मारे
शीत-निष्क्रिय था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पता नहीं

'मैं' से कटे हुए 'तुम' तक
मैंने जो हाथ था पसारा
पता नहीं, वह मेरा था या तुम्हारा!
जिस अहैतुकी निर्मिति को
अपने बीच हमने संज्ञा दी थी सेतु की,
एक नारेबाज़ उग्र भीड़ को समर्पित कर दिया
उसे ही–
पता नहीं, मैंने या तुमने!

अब जो 'मैं' हूँ वही 'तुम'
जो 'तुम' हो वही 'मैं'
यानी, अब हम दो नहीं हैं
पर इसका अर्थ यह कहाँ
कि
हम एक हैं?–
हम जो हैं,
पता नहीं, वह 'तुम' हो या 'मैं'!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विपर्यय

तुम्हारे हाथ में
यह कौन-सी किताब थी उस दिन--
(कुछ याद नहीं पड़ता) जिसे तुमने
बड़े उत्साह से उठाया था!

कितना बेतुका है यह सवाल
कि फिर क्या हुआ जो तुमने अधपढ़ी ही
रख दी वह किताब/ अपनी मेज़ पर
बिना कोई भी चिह्न लगाये!

वह किताब आज भी रखी है
वैसी ही अधपढ़ी
फ़र्क यह है
    कि पहले वह तुम्हारी मेज़ पर थी
    अब
    मेरी पर है।
सुना है, तुम्हारी मेज़ पर अब
अधपढ़ी किताब नहीं / अधबुना स्वेटर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होता है/ जिसका दूसरा पल्ला
तुम्हारे हाथों की सलाइयों पर
झूल रहा होता है!

पता नहीं क्यों
अक्सर मुझे कुछ
याद आता हुआ-सा,
भूल रहा होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मोह न नारि नारि कै रूपा

इस तरह प्रशंसा न करो मेरे दोस्त,
मेरी इस कमीज़ की,
मेरे तन से
ज़्यादा नज़दीकी रिश्ता है जिस बनयाइन का
उसका दिल फट जायेगा।

इस चमकदार /बेदाग़
कमीज़ को पहनने से पहले / मैंने इस
बनयाइन से कुछ वादे किये थे,
सबके सब मुझे नहीं याद, एक के सिवा–
कि जब मेरी देह का पसीना
इस बनियाइन पर
अपनी नीयत बिगाड़ेगा, तो मैं
कमीज़ से पहले
बनयाइन की परवाह करूँगा!
सच, ऐसा ही करता हूँ मैं हर बार
बिलकुल यही,
(गंगा जल उठाने की ज़रूरत नहीं है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न गीता पर हाथ रखने की)
मगर
मजबूरी है कि ऐसा करने के लिए मुझे
पहले अपनी कमीज़ उतारनी पड़ती है
और/ बनयाइन को शक यह होता है
कि मैं / उसके मुक़ाबले में
कमीज़ को प्राथमिकता दे रहा हूँ।

तटस्थ प्रशंसा का जैसा भाव
मेरी कमीज़ के प्रति/ तुम्हारी आँखों में है
काश, वैसा ही कुछ
मेरा बनायाइन के मन में भी होता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सत्योन्मुख भ्रम

एक सम्पूर्ण मनुष्य होने का वहम
अपने वस्त्र के नीचे
पीठ पर रेंगता हुआ महसूसना
कितना सुख देता है!
लेकिन इस सुख का मोह
पैदा करता है महज़ एक खुजलाहट।

खुजलाना अच्छा लगता है
खुजलाना अच्छा होता नहीं।

खुजलाहट को पीठ पर टटोलती हुई
मुड़े हुए हाथों की उँगलियाँ/ जगह-जगह
बेमतलब संज्ञाओं में भटक जाती हैं...
खरोचें कल्लाती हैं
कल्लाहट से उपजता है जो बोध
वही सच है
कोई भ्रम—बावजूद इसके कि भ्रम है—
यहाँ तक ले आये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो क्या यह कम है?

'होना' एक अनुभव है
अनुभव एक सुरसुरी है
जैसी भी—अच्छी या बुरी है,
अस्तित्व की धुरी है।
टिका या घूमता पिण्ड
जैसा या जितना दीखता है
उतना ही नहीं है वह
फिर क्या पूर्ण
क्या अपूर्ण?

भ्रम की अपेक्षा इसीलिए तो है
कि वह
 पार तह के पार तह के पार
 तह के
 संवेदना को पहुँचाये उस द्वार
 तक / जिस पर थाप देते ही
 हाथ की टटोल आप से आप सार्थक हो,
 सुरसुरी शुरू हो जिस्म में,
 अनुभव हो—
 एक भौतिक यष्टि
 मनुष्य 'हो'।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदमी और कपड़ा

उन्होंने जब / मेरी ओर देखकर थूका–
(और उससे पहले खुलकर खखारा) तो
उनके गले में टाई थी।
मैं अपनी सादगी पर
इतरा उठा / छितरा दिये अपनी मजबूरियों के
वहम
उस आँगन में, जो
रौशनी को एक बहुत पतली पट्टी से
दिन में सूरज की और रात में चाँद की
कंजूसी के शिकवे किया करता था / हरदम।

पर यक-ब-यक
वो जाने कहाँ खड़े हो गये
कि उनकी परछाईं इस आँगन में आई
और / रोशनी की वह बहुत पतली पट्टी भी
लील गई।

यह उनकी परछाईं थी,
जो सब पर छाये थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब यह परछाईं हिलती तो लगता, वो
पोशाक बदल रहे हैं, पोशाक–
जिनके रंगों का अनुमान कर सकना संभव नहीं होता,
'कट' के बारे में ज़रूर कुछ सोचा जा सकता था।
सोचा भी
मगर यही तो सोच बन गया
सादगी के बेदाग़ माथे पर एक खरोंच बन गया।

प्रश्न कौंधा आपसे आप–
'तुम भी क्या आदमी हो?'
कौंध में दिख गये कई वस्त्रागार...
आदमी ही आदमी थे जहाँ
मैं न था,
वस्त्रागारों के शो–रूम
आदमी ही आदमी थे जहाँ
मैं न था....

'आदमी' और 'मैं' के मिलान के इसी बिन्दु पर
वह शुरुआत हुई जिसका ज़िक्र
तुम्हारी आँखों की चमक ने मेरे गले की टाई देखकर
किया था....

मगर फ़िक्र का कारण तो यह फ़िकरा है /जो
थेगली की तरह
तुम्हारे मौन पर सिया था, कि–
'तुम आदमी नहीं,
कपड़ा लगते हो!'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चन्द्रग्रहण को देखकर

चाँद पूरनमासी का
कितना छविमान हुआ करता है
किन्तु आज इस पर/ छाया जो पड़ गई/ मेरी इस धरती की,
कैसा अपाहिज-सा दिखता है यह!

फीकी-सी
दिखती है सारी की सारी छवि
और जब कि /केवल छाया ही धरती की
पड़ी है।

बेचारा यह
कैसा दिखेगा जब
उतरेगी इस पर हमारी यह धरती
वास्तव में!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़लतफ़हमी

अकालग्रस्त क्षेत्र का एक भूखा इन्सान
निराश हो गया बेरहम धरती से
याचना करे तो किससे?
सहसा उसकी निगाह उठ गयी आकाश की ओर–
आधी रोटी! सफ़ेद, जैसे अमेरिकन नहीं
देसी गेहूँ की हो!

भूख और बढ़ गयी, आँतें बेचैन...तरस उठीं
काश, इस आधी रोटी का एक
छोटे-से-छोटे-से-छोटा
टुकड़ा वह पा सके कि...वह...खा सके....
लेकिन हाथों ने उठने से जवाब दे दिया
तरसते हुए दम तोड़ दिया
उ...स...ने....

'न होने' का नहीं / 'होते हुए न पा सकने' का ग़म
उसे खा गया...

यह तो बाद में किसी ने कहा
कि वो आधी रोटी नहीं,
आधा चाँद था!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जहाँ

फिर आ गया हूँ मैं
जहाँ हवा का एक झोंका क़ैद है
बहुत दिनों से जहाँ
एक शतगन्धा खुशबू नज़रबन्द है
ठूँठ से लटका दिया गया है जहाँ
मौसम को
उम्मीद जहाँ सिर्फ़ एक बाज़ारू लड़की है
जिसके ब्लाउज़ के बटन / सब आगे टटोलते हैं
बटन जहा हैं नहीं—सिर्फ़ जिसे
पीछे से अटका दिया गया है हुक में
ज़ंग लगे,
खोलते हैं आँख
जहाँ सिर्फ़ एक—दूसरे से आँख चुराने को
पाने को इशारों का मतलब
जहाँ सिर्फ़ एक भटकाव है
शक और शंका के बीच
एक बहुत हसीन—
मज़बूत और अटूट सिलसिला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जहाँ ख़त्म हो जाता है
किसी ऐसे सिलसिले के शुरू होने के क्रम में
जो कहीं खत्म नहीं होता
क्योंकि डाले रखता है वह हम सबको
एक से दूसरे / दूसरे से तीसरे.....
इक्यावनवें से बावनवें....को बड़ा मानने के भ्रम में
यह भ्रम / भ्रम है ही नहीं जहाँ,
क्योंकि इसे प्राकृतिक संख्याओं की गणितीय सिद्धि प्राप्त है।

फिर आ गया हूँ मैं
एक महकते हुए फूल की बड़ी चर्चा रहती है जहाँ
मगर इसलिए नहीं कि उसकी महक में
ग़ज़ब का सम्मोहन है
बल्कि इसलिए कि उसकी एक-दो-तीन-
सारी की सारी पंखुरिया एक-सी क्यों नहीं है।

कुदरत की बड़ी भारी भूल है यह
सरासर गुस्ताख़ी है
जिसके लिए अदालत में हाज़िर होने का सम्मन
लेने से कब तक इनकार करेगी ससुरी?-
कभी न कभी तामील होगा ही
वकील आश्वस्त है
                    फूल की महक से
                    क्या मतलब?
पंखुरियों की बनावट तब्दील होगी ही
फैसला फैसला है जहाँ
मज़ाक नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर आ गया हूँ मैं
जहाँ हमेशा होता हूँ
हर साँस लेने के साथ
हर साँस लेने के बाद
भागता हूँ जहाँ से बहुत तेज़ बहुत तेज़ बहुत तेज़
बहुत दूर बहुत दूर बहुत दूर
देखता हूँ–फिर आ गया हूँ मैं
वहीं
हाँ, वहीं!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शर–शैय्या पर

एक बहुत बड़ा मैदान
उस मैदान में एक बहुत बड़ी भीड़
उस भीड़ में एक बहुत उदास आश्चर्य.....

खुशी अगर है
तो उन आँखों में टँकी है
जो अपने चेहरे के अनुपात में
बहुत
छोटी हैं

इसी मैदान के एक कोने में
उस भीड़ के शोर की शर–शैय्या पर
लेटा है चित्त–
कोई मौन

शायद यह कोई–
नहीं है हमारा अपना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे 'तीन' और 'चौथा' मैं

वे तीन हैं
वे तीनों एक निश्चित क्रम में हैं
और चौथा मैं....
मैं 'चौथा' इसलिए नहीं कि उन्हीं तीन के क्रम में
मेरा भी स्थान है
मैं चौथा इसलिए
कि उन तीन में
मैं–
नहीं हूँ
उनसे अलग हूँ–क्रम को बिगाड़ता हुआ
फाड़ता हुआ वे सारे काग़ज़
जिन पर उनके दस्तख़त हैं।

मुझे शक पहले से ही था–अपने हाथों की
हरकत को इस क़दर
स्वाभाविक बनाने की चिन्ता
उन्हें क्यों है?

लेकिन उनकी हथेलियाँ जहाँ मुड़ती हैं वहाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिख गया है मुझे एक कब्ज़ा
अभी-अभी
और ज़ाहिर हो गया है कि उनके हाथ लकड़ी के हैं
चाहूँ तो झटक सकता हूँ मैं, मगर
उनके दस्तख़त में बड़ी ताक़त है
उनके दस्तख़त हों तो आकाश के तारे भी
हस्तामलकवत् हैं
                और मेरी कमज़ोरी है–
इस ताक़त में अटक सकता हूँ मैं।

इसीलिए फाड़ता हुआ वे सारे काग़ज़
                जिन पर उनके दस्तख़त हैं

मैं अलग हूँ
                उन
                तीनों से
क्रम को
                बिगाड़ता
हुआ।

अलग होता हुआ
जाता हूँ मैं
                उन तीनों के बीच
                रोज़
तीनों के बीच होता हुआ
निकल आता हूँ
अलग।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे अपने बीच मुझे पाकर खुश हो लेते हैं
मेरी बेचारगी पर।
उन्हें भरोसा बढ़ जाता है अपने लम्बे हाथों का
चढ़ जाता है उनकी आँखों में सुरूर
सन्तोष-सा
फेन-सदृश उतराता है जो उनके हर ठाठ पर
उतरता है रोष-सा कभी-भी जो
सिर्फ़ दो गज़ जमीन घेरने वाली
औंधी चारपाई-टूटी खाट पर
या, तार-तार फटे हुए
ज़रूरतों की तरह बिछे हुए टाट पर

मैं उनके बीच
अपने को पाकर
क्या होता हूँ-खुश या खिन्न?-
पूछना बेतमलब है
उनके बीच मेरा होना
उन्हें नकारने का एक ढंग है

जब वे
अपनी किसी बात पर बल दे रहे होते हैं, मैं
अपना सिर
ऊपर-नीचे करता रहता हूँ
वे इसे मेरी 'हाँ' समझ लेते हैं जबकि
मेरा मतलब होता है-खूब,
मैं तुम्हें खूब पहचानता हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊपर से नीचे तक
सर
से
पाँव तक।
मैं उनके मुँह नहीं लगता
वे मुझे मुँहलगी सिगरेट समझ लेंगे।

अलग आ जाता हूँ मैं–बीचोबीच।
उनके बीच मेरा होना सिर्फ़ एक अदा है
दो उंगलियों के बीच सिगरेट थामने की

फूँककर धुँआ उड़ाना उनका शौक है
सामने की मेज़ की
दराज़ों में
रख छोड़ी हैं उन्होंने तम्बाकू की पुड़िया
सुपारी का महीन बूरा—जब भी तलब होती है–
वे मिला लेते हैं और फाँक लेते हैं
मेरे वे कुछ नहीं लगते
मैं उनको अजनबी समझ लूँगा।
पास आ जाते हैं वे इर्द–गिर्द
मेरे लिए वे न मेज़ की दराज़ खोलते हैं
न टटोलते हैं जेब
रिश्ता टूटे न, रिसता रहे
इसलिए मँगाते रहते हैं वे इलायची के पान
मेरे लिए
जानकर कि तम्बाकू से मुझे परहेज़ है, बढ़ाते रहते हैं
वे काग़ज़ी तश्तरियाँ मेरी ओर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे उन तश्तरियों पर पीक के धब्बे नज़र आते हैं
अपने गिर्द
उन तीनों का होना
मुझे एक पीकदान का रक्खा होना दीखता है
जिसमें न जाने कब से
मैं पीक के समान उगला जाता रहा हूँ।

अब नहीं–अब और नहीं,
उबरना है मुझको
उन तीनों की बीच से गुज़रना है मुझको
न मैं पीक हूँ कि उगलते रहो मुझको
न मैं लीक हूँ कि चलते रहो मुझ पर
कुचलते रहो मुझको।

सम्हालें वे तीनों
कैसे सम्हालेंगे क्रम?
बचा लेंगे भ्रम?–जो मैं तोड़ता हूँ
उनके बीच रहता हुआ.... एक और एक मैं....
पहुँचाता हुआ उनको 'तीनता' तक
उनसे अलग हूँ–'चौथा'–'एक' मैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीवी से ग़रीबी तक

बात तब कुछ और थी/ जब
उसकी बीवी/सचमुच उसकी बीवी थी,
ग़रीबी थी/ मगर उसके बाप पर बीतती थी–
जुए में हार कर लौटता था जो
लगभग रोज़/जख़्म और जश्न की
समलैंगिक हरकतों को सहता हुआ
बिला जाता था जो
ठर्रे की बोतल में।

वह...तब....सिर्फ़...एक बेटा था
बचपन की खूबसूरत वादियों से/अभी-अभी
उठा था/चुप आ
जवानी की जादुई पनाहों में

गुदगुदे ख़यालों पर लेटा था
उछलती कूदती उफ़नती नदियों से
उसकी दोस्ती थी
उड़ती फुदकती गोरैया से उसका वास्ता था...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूख–तब, पेट को मरोड़ नहीं लगती थी
भूख–तब एक गुदगुदी की तरह जगती थी
रास्ता था जो भी,
ले जाता था उसे ख्वाबगाहों की ओर...
लौटता नहीं था कभी जो उन आँखों से
जिनमें उसे /चम्पई उजास नज़र आती थी
प्यास नज़र आती थी/ सागर से गहरी,
आकाश नज़र आता था
टिका हुआ कन्धों पर–दूर के दरख्तों के,
हरियाली की लहरीली लट में/ उलझाता
अपनी अंगुलियों को.....
लौटता ही नहीं था कभी जो उन आँखों से।

तब उसकी बीवी/सचमुच
उसकी बीवी थी–
वह
उसकी देह–लिखी इबारतों में
नया–नया अर्थ ढूँढ़ लेता था
–यह इबारत हर अर्थ का खुलासा है–
सोचा था उसने,
पर अर्थ/ इस तरह की हर इबारत को
दिया जा सकने वाला झाँसा है–
सोचता है अब वह!

जो गुदगुदी की तरह जगती थी उसके मन में
और कई–कई खुशनुमा/पारदर्शी सिहरनों के रूप में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शरीर के रोम-रोम में लहर जाती थी,
सिकुड़कर क्यों अब वही
पेट की मरोड़ भर रह गयी है?

ढलान पर सोचने की रेलिंग काम नहीं देती
लुढ़कना होता है बस-लुढ़कते जाना-
झेलना/जिस तरह उसका बाप झेलता था...
वह शराबी था
जुआरी था/ उसकी उम्र का एक-एक दिन
किस कदर उस पर भारी था....
महसूसता है वह अब-
ठर्रे की बोतल के सहारे
ज़िन्दगी को किस तरह उसका बाप ठेलता था!

अब वह खुद/ बाप की जगह पर है
उसके बीवी हैं/बच्चे हैं/ घर है
मगर वह कहाँ तक घर वाला है/ बाप है
या शौहर है?
घर कैसे है उसका घर/जिसकी देहरी
किसी और के दरवाज़े से फँसी है
जिसकी दीवारों पर दूसरों के उपले पथते हैं
और जिसका आँगन
उस महाजन की तिजोरी की एक नाबालिग़
गिन्नी के इश्क़ में गिरफ़्तार है-
जिसकी बही से/इन दिनों/उसका बहुत नाज़ुक रिश्ता है।
इस बही ने जब से उसे
अपने पास खींचना शुरू किया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह अपनी बीवी के पास जाने से कतराता है
बीबी के बग़ल में लेटते ही
उसे लगता है–महाजन की बही के दिल में
उसका अँगूठा-निशान/फैल कर
कुछ और जगह पा गया है!
चुम्बन की तृषा में
जब वह होंठ संवृत करता है
तो खाँसी उन्हें विवृत कर जाती है
खलनायिका साँस फूलती है तो–
जो हाथ
उसका सीना/उसकी पीठ
सहला रहे होते हैं,वे
बीवी के नहीं, बही के मालूम होते हैं–
महाजन की बही के!

बीवी–
अब उसकी निरीहता के छन्द में
आने वाले शब्द 'टी बी' का तुक है।
बीवी को/बेतुका करने वाली ग़रीबी की
हर सुबह–बड़ी बेरहमी से पकड़ा जाती है उसे
एक अदद जीभी/जिससे वह
अपनी ज़बान पर जमा हुआ बलग़म
अब साफ़ नहीं कर सकता!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यूरेका–यूरेका

समाजवाद आने वाला है
....
....
पच्चीस साल पहले के किसी
उत्साही भोर का अख़बार–
जिसे 'बाबू जी' ने खरीदा होगा शायद
मुझे
रद्दी में मिल जाता है
पीला हो गया है वह–बदरंग
और/यह क्या निरा संयोग है?–
कि इसी वक्त
'निखिल'–मेरा भतीजा
लौटता है स्कूल से
और
अपनी इतिहास की किताब पर चढ़ाने के लिए
उसे माँग लेता है मुझसे!

समाजवाद आने वाला है...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं खड़ा क्यों नहीं होता?
बैठा हूँ कब से अखबारों की रद्दी के पास
घिरा है इससे आलमारी का जो कोना
उसे साफ़ करने की सोचता हूँ
'शशी'–मेरी पत्नी–कहती है
यहाँ क्राकरी रखेंगे।
समाजवाद आने वाला है
जहाँ रद्दी थी वहाँ क्राकरी रख दी गयी है
मगर जहाँ क्राकरी थी, वहाँ?
वहाँ एक ट्रे रक्खी है–'शशी' का
भी अजब तरीक़ा
है–टूटा काँच वह फेंकती नहीं है
उसका तर्क है–
फेंकने से काँच की कोई किरच
कहीं भी पड़ सकती है
और पूरी सावधानी के बाद भी
घुटनों के बल/खिसकने वाले
'प्रियम' के गड़ सकती है...
इसलिए काँच की जो भी चीज़ टूटे/ उसे
फेंकने से बेहतर है, ट्रे में रख दें!

समाजवाद आने वाला है
–ऐसा ही चाहिए
यही उचित है.....
क्या चाहिए क्या उचित है–
मेरी पत्नी बेहतर जानती है
क्योंकि/मुझे आश्चर्य है, वह अब भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सपने देखती है
मैं उसके विपरीत
सपनों के विरुद्ध सोता हूँ।

सच कहता हूँ मैं
पूरे होशो–हवास के साथ
जो नाम ऊपर गिनाये हैं मैंने
उनके हितों से अलग
मेरा कोई रास्ता नहीं है

खून का रिश्ता है मेरा इनसे
ये मेरे अपने हैं
कुछ कल के सपने हैं....
कुछ कल के सपने थे....
तो क्या
अपनों के विरुद्ध होता हूँ मैं?

रामलाल, हैदर, झम्मन या रती राम
सुरतिया या सुमित्रा/विनीता,
जोखू या ज़ाहिदा–इन तमाम आम
नामों के बीच
मैं
क्यों ज्यादा सही पहचानता हूँ अपना नाम?
हालाँकि इनसे मेरा कोई वैसा
वास्ता नहीं है.....
यह सवाल नहीं है, समाजवाद है!
'कब आयेगा?' नहीं, अब आ गया है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे हिस्से में आ गया है
मेरे हिस्से में से खाता है
मेरे हिस्से में से पहनता है
साँस लेता है मेरे हिस्से में की
खून और मांस लेता है
मेरे हिस्से में से

बाबूजी, निखिल, शशी, प्रियम आदि
मेरे गिर्द चक्कर लगाते रह जाते हैं
और यह अपना हिस्सा लेकर रोज़
रफ़ूचक्कर हो जाता है!
रामलाल, हैदर, झम्मन, रतीराम, वग़ैरह की सूची में
अपना नाम देखता हुआ/मैं सो जाता हूँ.....

मगर/यह समाजवाद कहाँ सोता होगा?
ओह,
खूब मौके पर कौंधी वह बात.....
यूरेका.....यूरेका.....

देशभक्ति–नाटक मण्डली के लोगों ने
जो मुकुट मुझे सौंपा है जाँच के लिए,
हो गयी है उसकी परख–
इसमें कितना देश है
कितनी भक्ति
कितने परसेंट कुरसी है
और कितनी शक्ति!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भक्ति, कुर्सी और शक्ति का अनुपात तो मैं
अपनी गणित से निकाल लूँगा
मगर कठिनाई है देश के सिलसिले में
उसका नक्शा कहाँ से पाऊँ?
तुम्हीं सोचो
क्या मेरी औक़ात है कि मैं उसे ब्लैक से
खरीद सकूँ?

रहस्य की बात है
सुनो, समाजवाद ने
मेरे देश के नक्शों का स्टोर कर रखा है
मैंने कहा था न, यह मेरे हिस्से में से खाता है,
मेरे हिस्से में से पहनता है
साँस लेता है मेरे हिस्से में की
खून और मांस लेता है मेरे हिस्से में से
मगर
मेरे हिस्से के बिस्तर पर सोता नहीं है
मेरी देह के पसीने की गन्ध से एलर्जी है उसे!
उसकी आदत है, देश के नक्शे पर सोता है
रोज़ एक नक्शा बिछा लेता है।
और, एकदम चित्त
पसर जाता है उस पर
सिर हिमालय को ढक लेता है उसका
कमर उत्तर प्रदेश को
बाहों के नीचे गंगा-जमुना होती है
हथेली के नीचे ब्रह्मपुत्र,
कृष्णा-कावेरी....कन्याकुमारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सब/उसकी बेडौल एड़ी के नीचे
दबे होते हैं.......

जब वह उठता है
नक्शे को लपेटकर/हवा में एक ओर
फेंक देता है
उछालकर....

जादू हो गया है
मैं देखता हूँ/जो कुछ उछाला था उसने
वह नक्शा नहीं, नारा बन गया है
ग़रीबी मिट गयी है
अमेरिका, रूस, जापान में वक्तव्य देकर
लौटने वाला
एकदम अनजाना अनचीन्हा
अजनबी–अपना 'हमारा' बन गया है!

रामलाल हैदर रतीराम झम्मन
सुमित्रा सुरतिया विनीता और जाहिदा,
तुम सब सो रहे हो?
शशी शशी,
सपने देख रही हो क्या?
देखो देखो
समाजवाद आ गया है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाहर–भीतर

वह हमारे बाहर है
वह पाँवों के नीचे बारूद के फूल बिछाता हुआ
वह हमारे भीतर भी है/जासूस–सा
हमारी शिराओं को टटोलता हुआ
अनुच्चरित–सा कुछ बोलता हुआ
हमारी हर धड़कन के जवाब में

सभ्य दिखने के चक्कर में
हम जिन नाखूनों को कुतर डालते हैं
उन्हीं से वह अपनी भयानक अंगुलियों के कवच
तैयार करता है

और वह
हमारे भीतर–बाहर के बीच भी कहीं है
हमारे त्वग्संवेदन को
कुण्ठित करता हुआ/यानी उस पर
सुखाभासी बाम का लेप करता हुआ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह एक स्तर पर मरकर भी
दूसरे पर
तुरन्त जी सकता है
पसारकर अपनी/खुरदरी रसना
हमारी साँसों का संकल्प–रस–
सारा का सारा–पी सकता है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बारिश से पहले का अँधेरा

पुरवा इस तेजी से
दरवाज़ा खोल जाती है
कि लगता है–विद्रोह होने वाला है
जेठ के विरुद्ध।

मगर सच,
तुम बड़े घाघ हो
इसी वक्त तुम्हें आना था याद–
इसी वक्त/जब आसमान में
छाया हुआ हर बादल/काला है, भूरापन–
इसमें नाम को नहीं है

आसमानी रंग बदलें आके बादल अन्यथा
मरुथली माहौल में तब्दीलियाँ आनी नहीं

'काला बादल जी डरपावै'
माना यह अनुभव–सिद्ध वाणी है
पानी पर चढ़ाती है पर यह जेठ को,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आषाढ़ की अगवानी को/हरियाने को
उमंग रहे हौंसलों पर
फेरती यह पानी है।

सब कुएँ तालाब सूखे के हुए माना, मगर
अपने बादल भी न हों, यह तो कोई मानी नहीं

'काला बादल' कुछ नहीं कर सकते क्या?—
सिवा 'डरपाने' के,
नहीं, अँधेरा भी करते हैं!

इसी तथ्य को लेकर
अपने-अपने कमरों के भीतर कइयों ने
यह बहस छेड़ दी है
कि/अँधेरा डर का पर्याय है
या कारण....

पुरवा इस बहस से असहमत है
दरवाज़ों को इसी से उसने झिंझोड़ा है
झकझोरा है/भट्-भट्
करते हुए उसने इसी बहस की
ग़लत शुरुआत को तोड़ा है!

हौंसला देखो हमारा—आसरा अब भी हमें,
लोग कहते हैं कि खोई चीज़ अब पानी नहीं।

अधेरा न डर का पर्याय है न कारण
न कारण है डर का न पर्याय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अँधेरा डर को फींचता है
खींचता है ख़ौफ़ जज़्ब करता हुआ
अपने में सियाही को,
छाता है आसमान पर

गर्मी जब बला की हो
और जब रोशनी किसी को न उजलाती हो
जलाती हो
जेठ जब फिरता हो
हर सतह को अपने गंजे सर की तरह
खुजलाता
तब
यह अँधेरा ही
ज़मीन को सहलाता है,
खींचता है रोशनी से
निचुड़ते हुए ख़ौफ़ को
फींचता हुआ डर को
टाँगता है
हर आँगन की अलगनी पर
मेघमन्द्र–नन्हीं–नन्हीं/अदृश्य–
आश्वस्तियाँ।

पहचान में आता हुआ/धीरे–धीरे
यह अँधेरा ही तो है
जो ज़मीन पर/आसमान से
झुकता हुआ
उजलाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पतंग

भीगी छत पर
भोले बच्चे
मगन पतंग उड़ाने में हैं
नन्हें–मुन्ने हाथ–
डोर को
बड़े प्यार से नचा रहे हैं....
उधर–पवन का हाथ पकड़कर
पतंग गगन में नाच रही है
आती और पतंग जो आगे
उसे ललककर काट रही है!

सचमुच
कितनी ऊँची उनकी पतंग उड़ रही,
बच्चों के मन की उमंग का
क्या कहना है!

और
उन्हीं बच्चों का बापू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीचे–
चिन्ताओं में लीन
देहरी पर कच्ची ईंटों की
बैठा
कब से सोच रहा है–सचमुच
कितनी ऊँची
पतँग उड़ा लेते हैं
उसके 'मोहन' उसके 'सोहन'...
क्या इनका भविष्य भी इतना ही
ऊँचा है

रंग-बिरंगी इस पतंग ने
जो जो उजले सपने
इन अबोध आँखों में
अब तक छितराये हैं,
क्या वो कभी पूर्ण भी होंगे!
क्या उन सपनों के सोनल पंखों का
कल भी–
साथ दे सकेगी
यह चंचल वायु समय की?
आह, अभागे!
कल क्या होगा–
किसे पता है?
सोच रहा है अब ही से क्या?
देख,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खड़ा है तेरा सोहन
माँग रहा है बस
                    दो पैसे–
'वह पतंग कट गई'
कह रहा–
'नई पतंग ले आऊँ बापू?'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुतली घर का भोंपू

रोज
पुतलीघर का भोंपू
दिन में कई बार बजता है,
और जब बजता है
मज़दूर भागता है
बिना खाना खाये
खाने की छुट्टी हुई
तो हाँथ में पकौड़ी
या
दही बड़े का दोना दबाये...
किसे फ़ुरसत है—
दाँत पर दाँत चलाकर
कौर को चबाये?
(चबाने का काम
अब
खाने वाला नहीं,
खिलाने वाला करता है।)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पानी के सहारे
रूखा-सूखा सब कुछ
कंठ-नली लील जाती है
इतना भी नहीं हो पाता
कि कौव्वे आते हैं
चील आती है–
मज़दूर नुचता है
मील गाती है
मील गाती ही जाती है
जबकि बीच-बीच में
पुतलीघर का भोंपू फिर बजता है
चीख़ता है...
और जब, चुप रहता है
तो यह अपनी धरती के धुएँ से
आकाश की नीली-नीली आँखों को
ढकते हुए
साफ़ दीख पड़ता है!

रोज
पुतलीघर का भोंपू
दिन में कई बार बजता है
और, जब बजता है–
घरों में बैठे लोग अन्दाज़ लगाते हैं
'अब सुबह के पाँच बजे हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब दोपहर के दो
शाम के सात....
यों लोगों ने
बिना घड़ी की घड़ी बना ली है!
खड़ी देखती है एक कसक
और उधर–किसी मज़दूर ने
अपने जीवन की एक–
छोटी–सी घड़ी
मना ली है!

कि फिर बजा पुतलीघर का भोंपू
किसी को बाहर निकलना है
किसी को भीतर जाकर
मशीन चलानी है, अपने को
छलना है!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतवार का दिन

आज दिन इतवार का,
हफ़्ते का एक दिन–
दिन बड़े प्यार का!

सुबह सुबह/चीख़ा नहीं
भोंपू आज मील का
शोर नहीं आज
किसी कौव्वे का/चील का!
आज जितनी देर चाहूँ सो लूँ
नहीं–नहीं, फ़ुरसत का/एक दिन
मिलता है/जीवन के लिए
जी भर
                    रो लूँ
कल फिर हँसना है
और अधिक और अधिक मेहनत से
देश की ग़रीबी को डसना है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और इस सबके बीच
हर हफ़्ते/आना-जाना इतवार का
लगता है बड़े सार का

इस दिन मैं
अपने घर की दुनिया में घूम सकता हूँ
अपने किसी बच्चे का
पिचका हुआ गाल
इत्मीनान से चूम सकता हूँ/और अगर
पैसे हुए/तो कम्पट बाँट सकता हूँ
और अगर बीवी ने
—मिर्च नहीं है/मसाला नहीं है
आटा नहीं है/दाल नहीं है—
शोर मचाया
तो उसे जी भर डाँट सकता हूँ
सबक दे सकता हूँ उसे
घूँसे की/लात की
मार का!

आज दिन इतवार का!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुक्ति-काम गाँधी

ओ मेरे देश के उत्सव-प्रिय लोगो,
भूखे पेट भी
तुम
उत्सव मना लेते हो
प्रशंसनीय है
तुम्हारा
उत्साह!

दबाकर घायल सीने की आह
तुमने खूब सीखा है
कि किस तरह करना चाहिए
उधार ली गई मुस्कुराहटों से निबाह!

ओ मेरे देश के भाषण-प्रिय लोगों,
तुम सही अर्थों में मेरे अनुयायी हो
मेरा नाम लेते हो
अहिंसा से काम लेते हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गिरता है आदमी
तो तुम–आदमी को नहीं–
आदर्शों के मंच पर रक्खी
कुर्सी को/थाम लेते हो
करते हो मेरी ही तरह
तुम भी
सत्य के साथ अपने प्रयोग,
झुकता है भीड़ में खोया हुआ सच
तुम
तन कर सलाम लेते हो!

ओ मेरे देश के लक्ष्य–बेधी लोगो,
एक गोडसे की गोली का
लक्ष्य बना था मेरा सीना
तुमने लक्ष्य बनाया मेरी आत्मा को,
स्थूल से सूक्ष्म की ओर
तुम्हारा यह अभियान
द्योतक है
तुम्हारे निरन्तर सभ्य होते जाने का!

तुमने बार–बार
अपनी बन्द मुट्ठियों को
हवा में उछालकर
मेरी जय बोली है
मैं तो हिसाब भी नहीं रख सकता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारे उपकारों का
कुछ फ़र्क नहीं पड़ता है लेकिन,
मेरे देश की धरती
क्लर्क-प्रसूता है!
बहुतेरे क्लर्कों ने
अपनी फ़ाइलों में
दर्ज़ कर रक्खा होगा ज़रूर
पूरा ब्योरा नारों-
जय-जयकारों का!

यों, इतना एहसान ही तुम्हारा
कुछ कम नहीं है, लेकिन क्या
इतना एहसान और न करोगे
अपने इस बापू पर
अपने इस गाँधी पर
इस राष्ट्र-पिता पर
कि-
इसे मुक्त कर दो!

इसके चरखे से कते हुए सूत में
इसी को बाँध कर
तुमने डाल दिया है इसे
किसी खादी की दूकान में
और शांन्ति के नाम पर
उड़ा दिये हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सच्चाई के कबूतर
स्वारथ के दूर तक
फैले मैदान में!

ओ मेरे देश के मुक्त चिन्तको,
मुझे मुक्त कर दो–
मुक्त–
इस राष्ट्रपिता को
मुक्त कर दो!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक गिरे हुए मकान को देखकर

जाने कितने दिन लगे होंगे
तब यह मकान बना होगा
जाने कितनों का हाँथ
चूने और गारे में सना होगा
हर दो ईटों के बीच
दफ़न हुई होंगी
जाने कितनी बूँदें पसीने की,
बदले में पा गईं होंगी राहत
जाने कितनी लालसाएँ जीने की!

और जब यह मकान बन चुका होगा,
परिवार बसे होंगे
कोई आया—कोई गया—कोई रुका होगा...

इसके ज़ीने की
एक—एक सीढ़ी पर
पीढ़ी—दर—पीढ़ी लोग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उतरे होंगे–चढ़े होंगे!
घरौंदे बनाये होंगे बचपन ने
यौवन ने जाने कितने चित्र
हृदय के इन्द्रधनुषी शीशे में मढ़े होंगे
अनुभवी बुढ़ापे ने
जाने कितने आदर्श गढ़े होंगे....

कुछ ऐसे भी दिन
इस मकान ने देखे होंगे
जब यहाँ बजी शहनाई होगी
घर जगमगाया होगा–
दूलह की तरह/इसे भी लोगों ने
सजाया होगा
मण्डप के नीचे बैठी
दुलहन लजाई होगी
देवर और ननदों के
रेशमी वार सहती
लाज में घिरी रहती
नई भौजाई होगी...

जीवन की हँसती हुई छाँवों में
कुछ किशोर किलके होंगे
कई बार/कोमल–कोमल बाँहों में
अपने को पाकर
वक्षों में छिपे चोर पुलके होंगे...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अक्सर कुछ सपनों ने
खाया यहाँ धोखा होगा
यहाँ भी आया अक्सर
तूफ़ानी झोंका होगा....
कितनों ने मर मिटकर
किसी तरह आस की ज़िन्दगी बचाई होगी
ममता ने फिर-फिर
मेंहदी रचाई होगी...

जीवन ने/जाने कितने रंगों का जाल
इस मकान में बुना होगा
लेकिन अवश्य ही
अपने अनदेखे/भविष्य का स्वर भी
इसने सुना होगा!-
वह भविष्य/जो आज
वर्तमान है,
यह वही मकान है
जो अब मात्र
मलवे का ढेर है-
समय का फेर है!
जब-तब किसी टीले पर
कौव्वे बैठ जाते हैं
लेकिन आज
उन्हें कोई नहीं उड़ाता
कोई नहीं उड़ाता...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई नहीं कहता–
'कहहु तात फुर बाता!'

अँधेरे कोनों में मकड़ी के जाल...
ओह,
बीत गये...कितने साल!

जाने कितने दिन लगे होंगे
तब यह मकान बना होगा
जाने कितने रंगों का जाल
इस मकान में तना होगा...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नामी आदमी

वैसे तो हर आदमी
सृष्टि का मुकुट है
प्राणियों में श्रेष्ठतम–
बुद्धि का स्वामी,
पर आदमियों में भी कुछ
होते हैं बहुत अधिक नामी!
नामी इस अर्थ में नहीं कि उनके नाम
भारी होते हैं/नामी इस अर्थ में कि
उनके भाषण जहाँ कहीं जारी होते हैं,
तालियाँ बजती हैं नारे लगते हैं/और
उनकी कृपा का त्योहार मनाने के लिए
उजड़े हुए उपवनों को आर्डर दिये जाते हैं
कि तुम गेंदे उगाओ
कि तुम गुलाब उगाओ
उपवन कहता है–
मैं उजड़ा हूँ
बसन्त की सेवा में/आज तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
किसी बड़े की सिफ़ारिश न पहुँचा सका।
फल यह हुआ कि बसन्त आया
मगर मैं उसकी कृपा की
एक कोंपल भी
न पा सका!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आत्मघाती भाई से

तुम नहीं रहे,
यह खबर मुझे इतनी जल्दी सुननी होगी–
मालूम न था!
तुम नहीं रहे
जिससे मैंने यह सुना
अधर उसके काँपे थे
आँसू बन बह आई थी/उसके मन की
मासूम व्यथा!

तुम नहीं रहे–दो एक नहीं, दस बार
सुना–तुम नहीं रहे,
पर सच मानो, मेरी आँखों से कहीं
नाम को भी दो आँसू नहीं बहे!
ऐसा लगता है/जैसे मेरी आँखों में
वह रेगिस्तान समाया है/जिस पर केवल
आँधियाँ धूल की चलती हैं
चलते हैं केवल चक्रवात पर चक्रवात...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं सोच रहा हूँ–
आज तुम्हारे बारे में क्यों इतना सोच रहा हूँ मैं?
पहले तो कभी नहीं सोचा,
इतना भी नहीं
कि तुममें–मुझमें क्या रिश्ता क्या नाता है

फिर आज
तुम्हारा ध्यान/मुझे क्यों आता है?

मेरे भाई!
(यह सम्बोधन मैं प्रथम बार
दे रहा तुम्हें)
वैसे, जीवन की टेढ़ी–मेढ़ी राहों पर
तुम कहीं रहे
हम कहीं रहे
लेकिन अब–जब तुम नहीं रहे
तो याद मुझे उन चौराहों की आती है
जिन पर हम तुम
अनजानों से मिल जाते थे
हाँ, बिलकुल
अनजानों–से ही

लेकिन भाई, जो छल जो धोखा
तुमने मेरे साथ किया, वह तो कोई
अनजान नहीं कर सकता था!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यों–मरने को
मैं भी तो यों मर सकता था
पर जब जब भी/ मैंने विष की
शीशी खोली, हँसकर बोली–
रे पागल,
तूने इने–गिने
दो–चार दुखों को भोगा है
लेकिन
ऐसे अनगिनत लोग हैं दुनिया में
जिनको दुख भोग रहा है
औ' वे भाग न पायें दुनिया से
इसलिए/ सदा उन पर तैनात
दुखों का एक दरोग़ा है!

वे चाहे–अनचाहे
साँसों के साथ विश्व का दिया हुआ
विष पीते हैं
हँसती है उन पर मौत तथा वे
जीते हैं!

यों–मरने को मैं भी तो यों मर सकता था
लेकिन मर सका नहीं!
जो मैं कर सका नहीं
वह करके तुमने
मेरे विश्वासों को भी विष दे डाला,
जो प्याला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने अपने लिए भरा था
वह भी ले डाला!

अब मैं कैसे कह सकता हूँ
कि दुखों पर भी सौ दुख बीते
फिर भी मैंने देखा है
अपने भाई को
हँसकर
जीते!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यादों के सींखचे

देखो तो, जिसे कभी–
रोक नहीं पाये फ़ौलादों के सींखचे
आज उसे घेरे हैं यादों के सींखचे

कितने मजबूत हैं ये यादों के सींखचे !

सोचा था–वादे कराये हैं इतने
जी लेंगे, जीवन–क्षण पाये हैं जितने....
लेकिन हुआ यह कि–
साँसों की डोर तो
सौ झटके भी झेल गई
और इधर–
एक ही झटके में,
आशा ही आशा के प्राणों से खेल गई...
टूट गये कितने ही वादों के सींखचे !
कितने मजबूत हैं ये यादों के सींखचे !

भीतर की परतों में आँधी–सी चल गई
छाई थी जो घटा, वह भी निकल गई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उर का आकाश अब सूना-सा लगता है
पहले का त्रास अब दूना-सा लगता है
नीलापन बढ़ गया
छोरों के नयनों की कोरों में-
क्षितिज की बाँह पकड़-
सूखी सरिताओं के सूने कगारों का
गीलापन चढ़ गया...

खुल खुल जाते हैं उन्मादों के सींखचे
दौड़-दौड़ पड़ते हैं-
सोते सिपाही फिर साधों के बीच से....

देखो तो-जिसे कभी
रोक नहीं पाये फ़ौलादों के सींखचे
आज उसे घेरे हैं यादों के सींखचे,
कितने मजबूत हैं ये यादों के सींखचे!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऋण गुणा ऋण

दौड़ में यह कौन औंधे मुँह गिरा है?–
चीन्हने को विकल
कोई सिरफिरा है!
सिर फिरा कर देखता है जो किसी पीछे गिरे
सहयात्री को
पन्थ को पदचिह्न उसके चीन्हने की
अब ज़रूरत ही कहाँ?
दौड़ने की हड़बड़ी में पाँव
पथ पर पड़ तिरस्कृत कर रहे पथ को,
इसी से उन्होंने पहचान अपनी बना ली है
नहीं तो, कौन ख़ाली है
किसे पहचानने को!

लोग–
हाथों में लिए नकारनामी ध्वज
निकल पड़े हैं अपने–अपने बाड़ों से
जिनमें–वे कहते हैं–उन्हें नहीं लौटना है
कभी अब।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छोड़ आये हैं वहाँ वे
अपनी परम्परा-प्राप्त विरासतें
सन्तरी की तरह पहरा देने को।

ठहरा देने को
सारा भूगोल ऋणात्मक अक्षांशों पर-
कृत-संकल्प है उनकी गति
गणित में कोई निशान नहीं उनके
जो धन का हो
ऋण से वे नाप रहे सारे आयाम
गो कि अभी, सूत्रों पर अपने
कुछ भी लिखने का उन्हें मौक़ा नहीं है
तो भी, उन्हें जल्दी है
अस्वीकृतियों की ज़िल्द फ़ौरन बँधवा लेने की
ग्रन्थ नहीं भी हो-तो भी
ग्रन्थि तो नहीं होगी-
ज़िल्द कुछ न कुछ कहेगी ही
ग्रन्थ के बारे में
जब कोई बैठेगा बाहर
प्रमाण के ओसारे में
ज़िल्द कुछ न कुछ कहेगी ही ग्रन्थ के बारे में

आओ, कुछ देर हम
शामिल हो लें खुशी में
जो फ़िलहाल उनकी आँखों में है ऋण से गुणित हो
साकार
शरीक़ हो लें उनकी ग्रन्थि-रहित आस्था में-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब तक–
उनके हाथों से तोड़ा गया कोई तिनका
दौड़ के दौरान
उनकी ही आँखों में न पड़ जाये और
वे स्तब्ध न रह जायें
नकारनामी ध्वज कन्धे पर टिका कर
हाथों से पलकों को सहलाते हुए
आँख जब वे खोलें तो हताश न हों यह देखकर
कि
इतना आगे आकर भी वे
परम्परा के अस्वीकार से
सिर्फ़
अस्वीकार की परम्परा तक ही आये हैं!

छोड़ आये थे वे जिन्हें बाड़ों के बाहर
पहरा देने को–लुट गये बाड़े–वे सन्तरी
जाने कब के भाग खड़े हुए, उन्हें पता ही नहीं चला।
वे सन्तरी उनके आगे चलते रहे हमेशा
पता चला तब जब वे
सिर फिराते दिखे
आगे अड़े।

पर
यह देखकर भी क्या हम
अस्वीकृतियों की आधुनिकता का ऋण
स्वीकार न करेंगे?–

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्रन्थि-रहित आस्था के ऋण से
निर्ग्रन्थि अनास्था का धन वरेंगे।
—ऋण गुणा ऋण
बराबर धन,
गणित के गुरु ने सिखाया था
बहुत पहले......
बहुत दिन बाद....आया याद।
आया याद तो मूल्याग्रही सन्दर्श
धुँधलाते हुए धन-चिह्न की परवाह से
आहत न दीखा
अर्थ सीखा
नया,
ऋण को कर गुणित ऋण से
लिया पा—
स्वयं के पुनर्परिभाषित होने का
तरीक़ा!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ अन्य कविताएँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सोता हुआ बच्चा

देखा है लोरियों को
इस तरह झपकते हुए
कि मन एकदम आसमान
की तरह खुला हो जाए!

देखा है जागरण को
नींद में घुलते हुए–इसतरह
कि सपनों का झाग हो
और पूरी की पूरी दुनिया
बुलबुला–बुलबुला हो जाए!

चिड़ियाँ–जो बसेरा नहीं
ले पाई हों कहीं, किन्हीं वृक्षों पर–
देखा है उन्हें
नन्हीं पलकों की पँखुरियों पर
बसेरा लेते हुए!

देखा है क्षितिज को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नन्हें होठों-सा होकर
मुस्कुराते हुए
और   चंदामामा के कटोरे से
थोड़ा-थोड़ा दूध
रह-रहकर चुराते हुए!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संजय उवाच

सात हाथ,
तीस पाँव,
तीन सौ पैंसठ मुँह....
कल्पना करो बंधु, किसी ऐसी आकृति की
बताओ तो, उभरता है कौन-सा यथार्थ

कल्पना मात्र से भयभीत होने वाले तो
तुम नहीं हो न?
कि स्रंसने लगे तुम्हारा गांडीव

और फिर ध्यान में जो भी आएगा
वह मनुष्य ही तो होगा, राक्षस तो नहीं!

जितने मुँह उतनी बातें
जितने पाँव उतनी चालें
जितने हाथ उतने कर्म-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुपात में तो
कहीं कोई गड़बड़ी नहीं है ना?

कोई दिन/कोई सप्ताह
कोई मास/कोई वर्ष
ऐसा तो नहीं बीता, न बीतेगा गुडाकेश!
जब यह सब हो
और तुम न हो
हम सब न हों

यह सब होते होने में भी
कुछ हासिल न हो तो क्या?

गात्र क्यों सीदता है
क्यों सूखता है मुख तुम्हारा?
भारत में हे पार्थ,
हैं तो तुम्हारे रथवाह
सात हाथ के!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूर्यास्त

शाम होती है
मेरे घर का वह कोना
जो सबसे ऊँचा है,
अपनी ऊँचाई पर उदास होता है

रोज़ इसी वक़्त
ठीक उसी कोने पर
आ बैठती है एक चिड़िया
उजले पंखों और सपनीली आँखों वाली–
ऊँचाई से
अपनी ही परछाई में
छलाँग लगाकर
डूब जाने के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह—एक कोई और

मैं कुछ नहीं कह सकता
कि कैसे हुआ यह
पर हुआ

दबे पाँव वह
मुझमें से निकल कर
बाहर आ गया

आते ही एकदम सामने
उसने
सीधे सवाल किया—
किस भाषा में
        अपना नाम तुम्हें बताऊँ
        कि तुम मुझे पहचान लो?
मैं क्या जवाब देता उसे
जो इस तरह मुझसे मुखातिब हुआ
एक भाषा में
इस शक के साथ
कि उस भाषा में बताएगा अगर
वह अपना नाम
तो मैं
उसे पहचान न सकूँगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रार्थना का मौन

उन्होंने कहा–प्रार्थना करो
प्रार्थना में शक्ति होती है

भेद खुला–
प्रार्थना से ज़्यादा
प्रलोभन था शक्ति का!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिड़ियाँ

पंख सारे भीग चुके थे
बहुत से टूट पहले ही चुके थे
पर चिड़ियाँ थीं कि उड़ने की ज़िद
फिर भी ठाने थीं

कब की उड़ गईं वे चिड़ियाँ
पर लगता है, अब भी यहीं कहीं
उड़ रही हैं
मेरे आँगन के हिस्से के आकाश में
उनका स्वर अब भी मेरे हिस्से में है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आशीष–मुद्रा

सीधे खड़े होकर
हम
उनकी ओर देखने क़ाबिल भी नहीं रह गए
कुछ इस गद्गद् भाव से
अपने दोनों हाथ
उन्होंने
हमारे मस्तक पर पसारे

महसूसते रहे हम उनका आशीर्वाद

श्रद्धावनत नज़रों को मिली–
एक परछाईं
फैले हुए हाथों से कई गुना बड़े आकार वाली

अब सबकुछ समझ में आ चुका था
हम मुग्ध रहे
एक उजली आशिष–मुद्रा पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और
हमारे नाम
हमारी अपनी ज़मीन पर
अँधेरे का एक बड़ा टुकड़ा
लिखा जा चुका था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रास्ता

वह मेरे साथ था
बोला–
गंतव्य पर पहुँचकर ही दम लेंगे!

हम मुस्कुराए
और चल दिए
चलते ही गए

ठोकर–सी लगी उसे
वह गिर पड़ा

मैंने सोचा
उसे उठाना अब व्यर्थ है,
चल ही नहीं पाएगा साथ अब

मैं रुका नहीं
उसको उठाने के लिए
भी झुका नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिर्फ़ थोड़ी हमदर्दी
आँखों से उसकी ओर फेंककर
बढ़ गया।

गंतव्य पर देखा
तो वह मुझसे पहले मौजूद था

बोला–
मैं जिस रास्ते से आया
उसे बताया था उसी ठोकर ने
जिसने मुझे गिराया था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुआ यह क्या

धमनियों की धौंकनी से
फूँक
लौ लयबद्ध की–
हो लाल लोहा
जा सके पीटा निहाई पर
कि छेनी बन सके,
हर चोट से जो
छील अनगढ़ पत्थरों को
रूप दे

लेकिन हुआ यह क्या
कि अनगढ़ पत्थरों में
रूप उभरा हूबहू
हमशक्ल–
हम खुद हो गए पत्थर!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कब कोई क्षण

मौन हूँ
कि शब्दों का सूप लिए होंठ
रत हैं प्रतीक्षा में
कब कोई क्षण
दे ऐसे अर्थ को पछोर
हो जाए सारा अस्तित्व सार्थक

कौन हूँ?–
कि प्रश्नों से मुँह छिपाए
बैठा हूँ प्रश्नों की ओट

कब कोई क्षण
दे जाए ऐसा अँजोर–
प्रश्न लें टटोल मुझे आर–पार तक!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ अशआर : कुछ मिसरे

: 1 :

इस अदा में रूठने की ज़िद, गई ठानी कहीं
प्यास तो है सिंधु भर, पर बूँद भर पानी नहीं

रह गई बनकर कहावत सिर्फ़, अब दरियादिली
वरना दिल में दरिया के भी अब मेहरबानी नहीं

आसमानी रंग बदलें आके बादल अन्यथा
मरुथली माहौल में तब्दीलियाँ आनी नहीं

सब कुएँ तालाब सूखे के हुए माना, मगर
अपने बादल भी न हों, यह तो कोई मानी नहीं

हौंसला देखो हमारा, आसरा अब भी हमें
लोग कहते हैं कि खोई चीज़ अब पानी नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

: 2 :

हर तरफ़ खामोशियाँ, कोई सदा आने को है
थम गई हैं आँधियाँ, कोई हवा आने को है

कानाफूसी कर रहीं सहमी हुई परछाइयाँ
इस क़दर रोशन समा, कोई घटा आने को है

फेरा करना छोड़ बैठे हैं उमीदों के फ़कीर
अब करें किससे वो 'ना', कोई बला आने को है

डाकिये ख़ामोश गुज़रे हैं इधर से कुछ अभी
फिर कोई ख़त इनके हाथों बेपता आने को है

चौरहे पर भीड़ है, इंसान दिखता ही नहीं
लगता है, फिर कोई उनका रहनुमा आने को है

: 3 :

दामन जो देखना पड़ा अपना तो कहा, धूल
हर एक ठौर है कि रह पाए न साफ़-साफ़
महसूस कर रही है धूल भी ज़रूर कुछ
यह बात और है कि कह पाए न साफ़ साफ़

: 4 :

पहन के कपड़े उठा था कि क्या नज़र आया
आइने में तो मेरा अक्स था सँवर आया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाँव मेरे पड़ी थी पर मेरी परछाईं जो
अब भी नंगी थी, उफ़! तो मैं था इस क़दर शाया

: 5 :

क्या यह मुमकिन है, दिल में आप हों औ' दर्द न हो?

•••

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजेन्द्र कुमार

प्रमुख कृतियाँ : *'ऋण गुणा ऋण'* (कविता-संग्रह) उ.प्र. हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत। *'अनंतर तथा अन्य कहानियाँ'* (कहानी-संग्रह) *'प्रतिबद्धता के बावजूद'* (आलोचनात्मक लेखों का संग्रह), *'इलाचंद्र जोशी'* (साहित्य अकादमी के लिए मोनोग्राफ़) *'शब्द-घड़ी में समय'* (निबंध-संग्रह)। कुछ कविताओं का पंजाबी, बांग्ला, मराठी, तमिल और अंग्रेज़ी में अनुवाद, अभी हाल में प्रकाशित और बहुचर्चित कृति *'हर कोशिश है एक बग़ावत'* (कविता-संग्रह)।

संपादन : *'साही के बहाने समकालीन रचनाशीलता पर एक बहस'*, *'अलोचना का विवेक'* (देवीशंकर अवस्थी पर एकाग्र), *'अमन बनाम आतंक'*, *'स्वाधीनता की अवधारणा और निराला'*, *'प्रेमचंद की कहानियाँ : परिदृश्य और परिप्रेक्ष्य'*, *'मुक्तिबोध और अंधेरे में'*।

सम्मान : गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान, मीरा स्मृति सम्मान।
इलाहाबाद से *'अभिप्राय'* (साहित्यिक पत्रिका) का 1981 से संपादन। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा की पत्रिका 'बहुवचन' का भी 2009-10 में संपादन।

सम्पर्क : 12-बी/1, बंद रोड, एलनगंज,
इलाहाबाद - 211002

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन कविताओं की सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह है कि ये प्रायः उन सभी उपकरणात्मक कारकों का बहिष्कार करके भी कविता बनी रह सकी हैं जिनके द्वारा अक्सर 'उक्तिओं', को 'कविता' बनाकर पेश किया जाता है। संग्रह की पहली कविता, *'मिट्टी के ढेले'*, अपनी सादगी में जितना कुछ हमसे कह लेती है, वह अपने आप में, अनुभव और अभिव्यक्ति-दोनों के स्तर पर इस कविता की एक सार्थक उपलब्धि है।

'पावस की शाम', 'गुलाब', 'आदान-प्रदान', 'इतिहास और नदी' जैसी कविताएँ अपनी संक्षिप्त और सघन बुनावट में इसी तरह की कविताएँ हैं, जहाँ प्रकृति का अप्राकृतीकरण किये बग़ैर प्रकृति को मौजूदा मानवीय समाज के संदर्भ में समझने की चेष्टा की गई है।

आज़ादी के बाद भारत को जनतन्त्र के नाम पर जो व्यवस्था मिली, उसकी विडम्बना को हमारी रचनात्मक बेचैनी का लक्ष्य बनाने के लिए *'ऋण गुणा ऋण'* का कवि कहीं प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण को अपना माध्यम बनाता है (*'बारिश से पहले का अंधेरा', 'हवाएं और अख़बार'* शीर्षक कविताएँ) और कहीं व्यंग्य की बारीकी से काम लेता है (जैसे *'नया बरस', 'अतिरिक्त चेहरे', 'सभ्यताक्रांत', 'आदमी और कपड़ा', 'चन्द्रग्रहण को देखकर'* और *'नामी आदमी'* में)।

बारिश से पहले के अन्धेरे में आपात्काल के बावजूद अदृश्य आश्वस्तियाँ देखते हुए सक्रिय बने रहना इस कविता को जिस तरह सम्भव बनाता है, वह आपात्काल के दौरान लिखे जाने के दंभ से युक्त तमाम साहित्य के बीच अपनी अलग और शायद अकेली मिसाल है।

इस संग्रह में कथात्मक शैली की भी कुछ अच्छी कविताएँ हैं जैसे *'ऊँचा कहलाए जाने का मोह', 'वे तीन और चौथा मैं', 'बीबी से ग़रीबी तक'* और *'पतंग'* इत्यादि।

(पहल-२०, सितम्बर १९८२ में प्रकाशित समीक्षा से)

साहित्य भंडार
1964 2014 50
साहित्य के पचास वर्ष
9788177792935

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant